व्यंग वीथिका

हर उस व्यक्ति को समर्पित जिसने मुझे प्रेरित किया उन सभी को तहे दिल से शुक्रिया आशा है मेरी इस व्यंग रचना आपको पसंद आएगी

कविता का प्रथम पंक्ति उर्दू के मशहूर शायर फैज़ अहमद फैज़ को समर्पित है

जिनकी कविताओं ने मुझे और सभी समाज को झकझोरने का काम किया

मेरी ये कविताये भी समाज के बिन्दुओ को उठाने का और व्यंग करने का प्रयत्न करेंगी मेरा यह प्रयास रहेगा की ये रचनाये आपको पसंद आये

साथ में ही प्रेम व् विरह से लिखी गई एक आध कविताये है

इसके अलावा व्यंग से भरपूर कुछ लेख है जी राजनैतिक परिस्थितियों पर लिखे गए है

जिसे पढ़कर भविष्य में व्यक्ति वर्त्तमान के राजनैतिक परिवेश को समझ सकेंगे

उम्मीद करता हु आपको मेरी रचनाये पसंद आएँगी

लेखक

विशाल वर्मा,

Vermavishal11211999@gmail.com

रचना क्रम

1 काव्य रचनाये

2 सुनो सरकार

3 श्राद्ध का संकट

4 बिकाऊ मीडिया

5 इज़हार

6 चाँद

7 मैंने देखा है

गद्द रचनाये

1 बुरी नज़र और काला मुँह

2होली बचपन वाली

3 "इश्क ,बंदी और नोटबंदी "

4 राहुल गांधी

सुनो सरकार
सब ताज उछाले जायेंगे
सब तख्ता गिराए जायेंगे
जो अंधे तानाशाही में
महलो से भगाये जायेंगे ||

संगीनो के साये मे
जब राज चलाये जायेंगे
और इंकलाब चिल्लाने पर

जब गले दबाये जायेंगे ।।

आईंन मे लिखे हुये अक्षर
कोरे कागज बन जायेगे
और हाकिम के पालतू बाशिंदे
अपनी मर्जी चलवायेंगे

हम देखेंगे ....

जब हक को मागने वाले सब
जेलों मे ठूंसे जायेंगे ।।
जब आग लगाने वाले ही
फिर आग बुझाने आयेंगे ।।

जब दो + दो को पांच बता
वो अपने नियम बनाएंगे
जो स्वयं निरक्षर बैठे है वो
ज्ञान का दीप जलाएंगे ।।

जब बच्चे बूढे सडकों पर
'रोटी' रोटी चिल्लायेगे
और भूख से मरने वालो को
वो धर्म की याद दिलाएंगे।।

हम देखेंगे .....।।

जब जनता के प्रतिनिधि स्वयं को
बेच बेच कर आएंगे !!
और कुर्सी के लालच में आ के
राज द्रोह कर जायेंगे ।।

जब लोकतंत्र के स्तम्भ सभी
खोखले कर दिए जायेंगे
और लोक लाज के भय से सारे
लाज़िम भी झुक जायेंगे ।।

हम देखेंगे .....।।

हम देखेंगे ....

जो लौ ना बुझी बयारों से
जो सर न झुके हथियारो से

वो सर ही गर्व से उठकर के
'हाकिम' को सडक पे लायेंगे
हम देखेंगे ....

हम देखेगे ....

जो खुद को खुदा बता बैठे
जो लाखो 'भक्त' बना बैठे
वो सत्ता के गलियारो सै
अब जल्द भगाये जयेंगे

श्राद्ध का संकट

हम देखेंगे ....

मृत्यु की शैया पर पड़ कर
जब व्यक्ति चिल्लायेंगे
और चित परिचित कहलाने वाले
मरने की खैर मनाएंगे ।।

पुत्र सभी परिवार सभी
और संगी साथी यार सभी
जीवन की सकल कमाई को
नोच नोच कर खायेंगे !

जो संगी साथी साथ चले
जो प्रेम में ले कर हाथ चले
अब अंतिम स्नान करा कर के
तुम्हे घर से दूर भगाएंगे । ।

हम देखेंगे ....

जो बुरे समय में साथ न थे
डूबते समय भी हाथ न दे
शय्या पर फूल चढ़ा कर के
गुणगान तुम्हारे गाएंगे ! !

बंधन जिसने था तोड़ दिया
मरने को जिसने छोड़ दिया
वो आज तुम्हारे शव को
मरघट तक ले जायेंगे !

जब घर में अन्न दाना न था !
खाने का ठोर ठिकाना न था !
अब धर्म के ठेकेदार उन्हें !
सब दान विधान गिनाएंगे !

हम देखेंगे ....

कल तक जो घर था शुद्ध वही
उसे आज अशुद्ध बताएँगे
जो स्वयं पिशाची कार्य किये
वे भूत से भय अब खाएंगे

वे पुत्र जिन्हो ने जीवन में
पानी का एक न बूँद दिया
वे स्वर्ग में बैठे पितरो को
अब छप्पपण भोग खिलाएंगे

जिनको जीवन भर का तुमने
था अपना साथी मान लिया
सच आज उन्ही का तुमने सब
स्वर्ग से देख के जान लिया

ये झूठे है सारे बंधन
ये झूठा मिटटी का बर्तन
ये झूठा ही जग सारा है
यहाँ कोई नहीं तुम्हारा है

सब खाली हाथ ही आये थे
सब खाली हाथ ही जायेंगे ।।

हम देखेंगे

बिकाऊ मीडिया

सत्ता के अड़ियल कानो में
जू रेंग नहीं जब पाता है
तब लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ
अपनी ताकत दिखलाता है

वो अपनी कलम की धार से
अधिकार सदा दिखलाता है
और जब कोई षड़यंत्र करे
तो तंत्र को वो समझाता है

समाचार का कागज़ ही
आज़ादी का हथियार रहा
अंग्रेज़ो के समय से ही
स्वतंत्र विचारो का संचार रहा

हो लाला पंजाब केसरी

भीमराव का मूकनायक
समाज को जाग्रत करने में
रहा सदा ही सहायक

मगर समय ऐसा आया अब
नहीं है सच्चे पत्रकार
मोटी तनख्वा ले कर के
बैठा डाले जमूरे चार

अब न्यूज़- न्यूज़ के नाम पे
बस व्यूज बटोरा करते है
और TRP बढ़वाने को
हर तत्थय को तोडा करते है

अब पत्रकार केवल अपने एजेंडा
को चमकाते है
जनता हो बेहाल भले
उनकी सुधि न अब लाते है

चाहे भूख से सभी किसान मरे
ओलावृष्टि आसमान करे
वे रोज़गार बढ़वाने को
पकोड़े की रेसिपी बताते है

कुछ मीडिया तो बहुतेरे है

जाने भांग कौन सी खाते है
रह रहे हिन्दुस्तान में है पर
बस पकिस्तान दिखाते है

कुछ एक तो प्रभु बहुतेरे है
कान कसम से खाते है
L KG के बच्चो से
ज़्यादा वो चिल्लाते है

पत्रकार से अब नेता के
चमचो सा काम करते है
काम का कुछ न पूछते है
बस 'आम' पे चर्चा कराते है !

इज़हार

अक्सर डाली से अधखिला गुलाब तोडते हुये ,
हाथों में काॅटे चुभना आम बात है ।
मानो अपने अंदाज से पूछते हो
" जिसके लिये तोडा है
, उसे दे पाओगे ?"

क्या मेरा हाल भी उन्ही के जैसा होगा
जिन्हे हर रोज यहा से सुबह तोडते हो
और शाम को इक किताब
के पन्नो मे दबा देते हो ।

किस बात का डर है ?
मुझे देने से पहले
मेरे मुरझा जाने का ?
या उसके मुझे फेंक देने का ?

हो सकता है आज तुम्हारे हाथों मे हूं
कल उसकी किताबों मे मिलूं ..

वैसे ही जैसे तुमने संभाला है
कितनो को
अपनी किताब में ।"

पूछो अपनी उसी किताब से
जिसके आखिरी पन्ने पर
अपना नाम उसके साथ लिखा है
और फिर मिटा दिया है ..

क्योंकि कभी कभी
वो ये किताब मांग लेती है ।
वो कांपिया जिनके बीच के दो पन्ने फाडकर
एक खत लिखने की कोशिश की हैं
और फिर मरोड कर फेंक दिये हैं
डस्टबिन की ओर …...

ये कहकर कि "हैंडराइटिंग खराब है "
लाते हो ना सुबह
उसके लिये वो सिल्क वाली चाॅकलेट
और लंच मे देने की हिम्मत जुटाने तक
वो पिघल जाती है

ठीक बिलकुल तुम्हारी हिम्मत की तरह ...
अक्सर लडखडा जाते हैं ना तुम्हारे लफ्ज
उससे कुछ बोलने से पहले ...

जम जाते हैं ना ;

जब अचानक सामने आये ।

ये वही पैर हैं

जो बडी तेज उनका पीछा करते हैं ?

कितने जतन करते हो नजरों मे आने को

और नजर मिलने पर नजरे चुराते हो !!

Hmm...

इजहार इतना भी आसान नही होता ..

खुद से ज्यादा अजीज कुछ लगता दांव पर ...

चाँद

रात भर चांद क्यूं टकटकी
लगाकर ताकते हो मुझे ,
क्या तुम भी मुझे अपना
इकलौता दोस्त मानते हो ?,

या तुम भी मेरी तरह इन
पहचाने अजनबिये से तंग हो
छत पर चढ आये हो ?
क्या कहना है तुमको ?...

जो मेरे पीछे पीछे
छत के एक कोने से
दूसरे कोने तक आते हो ,
और पूछना चाहूं …..
तो दूर भागते हो ?

तुम भी यादों की मुंडेर पर
ठुड्डी रखकर
किसी की याद मे खोये हो ?

तुम भी अमावस की चादर

ओढकर रात भर रोये हो ?

देखो !! कैसै चेहरा पीला पड गया है ।

दिन भर चकाचौंध मे जागते हो ।

फिर भी रात को नहीं सोते ?

आंख मूंदने पर कोई चेहरा

तुम्हे भी दिखता है क्या ? …...

लोग आते हैं ना तुम्हारे पास

आपने प्यार के किस्से लिये ...

और

तुम किसी से नही कह पाते ..

छोडो सब !!!

आ जाओ नीचे ..

दोनो बैठें पैर लटका कर छत से ..

मैं रोज मिलूंगा यहीं ...तुम ना..

सब मुझसे कह देना ..

.मै किसी से नही बताउंगा ...

खूब रो लेना

मेरी गोद में सिर रखकर .

.फिर मै तुम्हे डाट लगाउगा ..

तुम मुझे बताना अपने महबूब का चेहरा ...

वो चॉकलेटी आखें ....

और वो बेशर्मी से लटकती कानों की बाली ..

वो सफेद मुस्कुराहट

जो लगता है....

तुम्हरी ही चमक से चमकते हैं ..

तुम जानते हो ना ...

वो जब छत पे आये

तो चूम लेना माथा उसका ...

कहो चांद ..

इतना तो मानते हो ना मुझे

मैंने देखा है

मैंने देखा है,

टूटकर बिखरते हुए ,

लड़कों को

एक लम्बी रात ,

और अगली सुबह के जिंदा बचे लड़कों को

पूरी दोपहर ,

बंद कमरों में सोए लड़कों को ।

भावशून्य , आवारा ,और लंपट कहकर

ठुकराए गए लड़कों को

रात डेढ़ बजे

, सड़क के कुत्तों से बातें करते

और सिगरेट पीते देखा है

डेढ़ घंटे मां से बात करने के बाद ,

बाथरूम में रोने वाले लड़कों को,

किताबों के लिए भेजे पैसे की शराब पीने के बाद ,

एक टाइम खाने वाले लड़कों को

मैंने देखा है

एक रात जागकर ,

एक मेसेज टाइप करने वाले लड़कों को

और अगले एक महीने तक,

उसी मेसेज को एडिट करने वाले लड़कों को

देखा है मैंने ,

संवेदनाशून्य कहकर ठुकराए गए लड़कों को ,

हॉस्टल के बगीचे में पौधों को पानी देते ,

अमावस के दिन चांद के लिए रोते ,

मैंने देखा है ,लड़कों को टुकड़े होते ।

तमाम दुश्वारियों, अवसाद और परेशानी के परे ,

मौज लेते लड़कों को ,

मैंने देखा है,

रूममेट से छुपकर कमरे में रोते लड़कों को ।

प्यार करने वाले लड़के ,

और प्यार में खून होते लड़कों को ,

मैंने देखा है, पानी की जगह शराब पीते लड़को को,

दूसरों को गरीयाते , और अन्धकार में खोते लड़कों को

मैंने देखे हैं लड़के ,

भरे होते हैं जिनके मेलबॉक्स मैसेजों से ,

अकेलेपन की कविताएं लिखते हुए ।

रातों को जागकर सपने देखने वाले लड़के,

प्यार में पड़े, और कोडिंग करते लड़के

मुस्कुराते हुए मां के पास खड़े लड़के ,

इस दुनिया में जबकि,

लड़का होते ही भर दिया जाता है, जिम्मेदारियों और उम्मीदों से ,

उन सबसे परे ,

सब कुछ झेलते हुए , हंसते हुए लड़कों को ।

तुम थे

तुम दूर भी थे ,

तुम पास भी थे
तुम खास भी थे ,

अहसास भी थे

तुम गर्मी मे जैसे बादल थे,
तुम पेडो के ठंडे ऑचल थे
तुम ओस की भीगी नरमी थे
तुम सर्दी की गुनगुनी गरमी थे

तुम बचपन के किसी खेल से थे
तुम वीरानो मे रेल से थे
तुम बचपन के किसी मीत से थे
कोयल के गाये गीत से थे

तुम मेरी आखो की चमक से थे
गांवो की कच्ची सडक से थे
फिर जाने क्या ऐसी बात हुई
पूनम को अमावस रात हुई

कल तक जब नैना मिलते थे
ह्रदयो मे कमल दल खिलते थे
अब छोर हुए दो नदियो के
जो आपस मे न मिलते थे

तुम भूल गये वो गुजरे पल
पर कैसे भूले बीता कल
अधरो (lips) से अधरो का मिलना
बंजर मे फूलो का खिलना

क्या वो सब खेल निराला था
क्या वो बस मधु का प्याला था
क्यो हाथ से गिर वो छूट गया
पत्थर पर गिर वो टूट गया

बुरी नज़र और काला मुँह

"अगर अंग्रेजो की बजाये अफ्रीकियो ने दुनिया पर राज किया होता तो आज दुनिया गालो पे फेयर एंड लवली की बजाय चेरी बूट रगड रही होती । "

मजाकिया बात लगती है मगर सच है ।

वर्तमान की चुप्पी भविष्य को सवाल खडे करने का मौका देती है ।

16 शताब्दी की अफ्रीकियो/एशियाईयो की कूप मंडूकता के कारण ही आज गोरेपन का बाजार फल फूल रहा है

जिस समय दुनियाभर के देश खोजी अभियानो पर जा रहे थे उस समय विश्व के काले लोग धर्मान्धता और डरपोक पने से जकडे हुये थे ।

अगर हिम्मत कर के अफ्रीकियो या भारतीयो ने वास्कोडिगामा या कोलम्बस की तरह यात्रा की होती तो आज आस्ट्रेलिया और अमेरिका मे भारतीय या अफ्रीका का इतिहास संजोया होता ।

हमारे धर्मो ने समुद्री यात्राओ को पाप बता दिया सो कभी कोई यात्रा करने का साहस ही न कर सका

और जिन्होंने किया तो उनके मठ आज चीन से लेकर जापान मलाया कंबोडिया मे पाये जाते है ।

बौद्ध धर्म के अवशेष आज भी हैं ।

इस्लामिक आक्रमण कारियो ने तपते रेगिस्तान को पार करने का साहस दिखाया सो आज वह देश जिसका इस्लाम के उद्भव से कोई लेना देना नही वहा भी उनका इतिहास फल फूल रहा है ।

हमने अहिंसा वादी होने का जिम्मा उस समय उठाया जब रक्त बहा कर साम्राज्य सींचे जाते थे

चन्द्रगुप्त /अशोक बिम्बिसार समुद्र गुप्त का नाम यू ही इतिहास मे नही याद रखा गया

इनके बाद का इतिहास हिन्दू /भारतीय इतिहास का वो काला अध्याय पेश करता है जिसमे हम कुओ मे आपस मे लडते मेंढक के सिवा कुछ न रहे ।

फिर तो जो आया हमे लूट कर ले गया कुषाण , यवन , तुर्की, अफगानी ,अरबी और मुगलो ने तो अनंतकाल के लिये डेरा डाल लिया । मगर ये भी वैसे ही निकले मेढक मगर थोडा बडे ।

वो तो भला हो हिमालय का कि मंगोलो से जान बचाई ।नही तो चंगेज खान के साम्राज्य मे हमारा भारत भी शामिल होता

मुगल आये तो इन्होंने ने भी समुद्र पार जाने की जहमत नही उठाई ।

अगर उठाते तो मुगलो को भी वही सम्मान मिलता जो चंद्र गुप्त को है ।

लेकिन आलस और विलासिता मे इन्होंने सारा समय निकाल दिया।

अगर अफ्रीकियो /मूल अमेरिकियो ने ये साहस किया होता कि वे पिछडेपन को त्याग कर यात्रा करते तो आज जो उनके शारीरिक रंग व बनावट का मजाक उडाया जाता है वो न होता । और जिस अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की उस अमेरिका से कोई होता जिसके नाम यूरोप की खोज का ताज होता ।

हर कोई चाहता है कि उसके व्यक्तित्व मे ताकत की झलक आये और चूंकि गोरे/अग्रेजो ने पूरे विश्व पर निष्कंटक राज किया इसी वजह से गोरापन भी एक प्रकार से शक्ति का प्रतीक बनता चला गया

और कालापन दासता का ।

आज भी नीचा दिखाने के लिए मुंह काला करने की बात होती है न कि मुह सफेद करने की

आज भी अधिक तर शादी के समय जो पहली शर्त रखी जाती है वो 'रंग गोरा' होती है ।

मैट्रीमोनयल एड्स को ही देख लीजिए

और कभी वर वधू मे रंग का ज्यादा अंतर हो तो मजाक बनाने वालो की कमी नही होती ।

ऐसे मजाक कि जिस पर आप भी हसते है और मै भी।

क्योंकि हमे हसना सिखाया गया है ।

मजाक ही मजाक मे हमने भी कईयो को कल्लू कालू या और रंगभेदी नामो से अनजाने मे ही चिढाया होगा ।

या चिढाते हुये सुना होगा ।

और हम भी उसी सिस्टम मे पिरो दिये गये ।

90% लोग अपनी फोटो को फिल्टर से एक आध शेड गोरा कर के ही डालते है

क्योंकि ये उनकी उस अधूरी चाहत को पूरा करता है

जो असलियत मे कोई मायने नही रखती ।।।

अब समाज मे ये विचार इतने भीतर तक डाल दिये गये है कि इन्हे पलटना असंभव सा है या तब तक जब तक हमारा वर्तमान विश्व के लिए नया इतिहास नही लिख देता ।

और वर्तमान नया इतिहास लिख भी रहा है बस आवश्यकता है तो समय की ।

होली बचपन वाली

देखो हम बडे हो गये ।
हम समझदार हो गये । अब हम पे दुनिया भर का पानी बचाने की जिम्मेदारी जो आ गई । हमे भी ग्रेट थैनबर्ग जो बनना है नोबेल पाना है स्किन का ख्याल जो रखना है । साल दर साल होली मनाने का उल्लास जाता जा रहा है ।
बचपन मे जब तक कॉलोनी के सारे लडको को 4 गली तक दौडा दौडा के मुह पर पक्का वाला काला और लाल रंग नही लगा देते थे तब तक होली समाप्त नही होती थी
10 रूपये की वो पिचकारी के सामने दुनियाभर की दौलत फीकी थी
और पानी के गुब्बारे यू फेकते थे एक दूसरे पर कि मानो द्वितीय विश्व युद्ध मे ग्रेनेड मार रहे हो

महीने भर लगते थे रंग को निकालने ने और इस गुस्से को शांत होने मे कि अगली होली देख लूगा एक एक को ...
वो शाम को बच्चो के झुंड बना कर एक दूसरे का घर जाना ।

और फिर समय बदला
हर किसी को पॉश बनना था
पानी बचाने का ज्ञान पेलना था । गुब्बारे मारने पर बैन लगाना था
कुरता फाड होली तो लालू जी के वर्चस्व की तरह इतिहास हो गई
कुछ आया तो बस वाट्सेप पर भेजे जाने वाले मैसेज
जो बस फारवर्ड होते रहे ।
रही सही कसर बाईक दौड़ते हुडदंगाईयो ने पूरी कर दी अब किसी को चार गली दौडाये भी तो बचते बचाते ।
अब वो चुपके से भांग वाली गुझिया खिलाने का चलन भी कम सा हो गया है ।
देखो शायद कभी वह समय फिर जीवंत हो जाये
तब तक के लिये होली मुबारक ।

"इश्क ,बंदी और नोटबंदी "

Warning- लेख समझ न आने पर पोगो देखें
समय--8-नवम्बर 2016
दिन- अच्छे
नक्षत्र- राहुकाल (अधिकतर के लिये)

"शाम का समय और हम नाश्ते मे गुजराती चाय और पकौडे खा रहे थे ,मेरे पिताजी पडोसी के लडके को सालाना निकलती दो करोड नौकरियो के बावजूद भी बेरोजगार रहने पर सुना रहे थे,और लडका अपने गुजराती स्टार्टप का आईडिया सुना रहा था "
सभी को लग रहा है कि आज शाम तक अच्छे दिनों का सूरज तो निकल ही आयेगा ।
खैर मैने टीवी चलाकर 8 बजे का अंजना जी☺ का प्रोग्राम देखने का मन बनाया । पर वहां तो मोदी जी दिख रहे थे (जो कि वैसै भी अक्सर दिखा ही करते हैं)
हमें लगा अच्छे दिन आने के कारण शायद हफ्ते मे दिनों की संख्या बढाने के लिये ऐलान होगा ...

पर उन्होने कहा
"500 1000 के नोट बंद ,काले धन खत्म "
मेरे पिताजी निश्चिंत थे क्योंकि कालेधन के नाम पर उनके पास मैं था और घर मे मेरी वैल्यू नोटबंदी के बाद हजार के नोट जितनी ही थी
कुछ देर बाद ही हमारे वे सारे रिश्तेदार (जो बस मेरे बोर्ड के रिजल्ट्स आने पर कॉल करते थे) ; को भी हम याद आ गये ।
हमारे बरसों के लिये गये उधार को ब्याज सहित लौटाने को तैयार हो गये
इधर खबर से अनजान छोटे मजदूर और कर्मचारियो को बोनस के साथ सैलरी दी जाने लगी और नबम्बर मे नट्स (ड्राईफ्रूटस) खरीदने के लिये अलग से बख्शीश दी गई।

एन्टी रोमियो स्काड के जमाने मे भी लव मैरिज की तैयारी मे बैठे कई लोग सदमे मे है ।
कई लोगो ने तो अपने घुटनों की ब्रेन सर्जरी के लिये भी डॉक्टर से अप्वाइटमेंट ले लिये ताकि कैश का इस्तेमाल हो ।
वे पडोसी जो हनीमून ट्रिप भी हरिद्वार मे निपटा दे , ने अपने लडके के लिये गोआ की फस्ट एसी की टिकट करवा दीं
देश मे सालाना 2 करोड रोजगार देने के बाद भी जब कुछ लोग नही काम ले पाये तो नोट बंदी मे सबको लाईन पर लगा दिया

अब बेरोजार आवारा लडके भी बडे काम आ रहे थे
जितने लोग वोटर कार्ड लेकर वोट देने नही गये थे
आज उस से ज्यादा लोग आधार लेकर atm के सामने खडे हो गये थे ।
वो क्रश जो कभी सीधे मुह बात नही करती थी, ने आज कॉल कर मुझे उसके नोट बदलवाने के लिये रिक्वेस्ट की । बाकियो का पता नही पर मोदी जी का ये फैसला मुझे बडा पसंद आया
जब नोट बदलवाने गया तो मुझे कई बडे अंबानी आडानी बिरला टाटा नोट बदलवाते दिख गये

इतने अमीर लोगो को लाईन मे धक्के खाते देखकर मै इतना खुश था कि कब मेरे पीछे वाला मेरे आगे आ गया पता ही न चला ।
इसी भीड मे एक टिपिकल इंगलिश बोलकर कुछ लडकियां लाईन मे लगा लेने की जिद कर रही थीं पर शायद वे भूल गई के ये गोल गप्पे वाला नही जो पिघल कर 2 एक्सट्रा गोलगप्पे खिला दे ।
लाईन मे खडे रहने के कारण बात बात पर पिघलने वाले लडके भी सख्त हो गये थे और लाईन मे जगह देने से मना करने लगे
तब मुझे लगा मोदी जी सही थे "मेरा देश बदल रहा है "
हालाकि नोएडा कि लडकियों को परेशानी नही उठानी पडी क्योकि उन्होने 25- 25 लडके फ्रेंडजोन कर रखे थो जो एक इशारे पे किसी की जान ले लेते ये तो बस atm लाईन थी
लाईन मे ही मैने कई स्व घोषित नोबेल विजेता अर्थशास्त्री बुड्ढो की डिबेट सुनीं और निश्चय किया कि हर रोज लाईन मे लगकर इनसे इतना ग्यान बटोर लूगा कि Upsc और kbc फर्स्ट अटेम्पट मे ही निकल जाये
लाईन मे लगे पत्रकार हमारा इंटरव्यू एसे ले रहे मानो ये एटीएम की नही रक्तदान की लाईन हो और हम रक्तदाता जो कि आच्छे दिन आने के कारण खून से लबालब हों
तभी मंकीकैप लगाये व्यक्ति ने पत्रकार को बताया
"अरे मा चिस बुझी परी है "
जिसके कारण अलाव (लकडियो) मे आग नही लग रही ।

इसपर कुछ भले व्यक्तियो ने 4- 5 हजार हजार के बंडल के इस्तेमाल से लकडिया जलाई ।

जैसे तैसे मैं एटीएम तक पहुंच पाया था की मेरी बुरी किस्मत ने ऐसी पलटी मारी की एटीएम में कैश ख़तम हो गया और मै किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा रहा

और एटीएम की निकली वो पर्ची मुझे मुँह चिढ़ाती रही

नफरत का व्यापार

सबसे अच्छा है नफरत का व्यापार
चाहे तो मुह मोड सकते है
ये बोलकर कि ये चीज हमारे सिलेबस की नही
पर क्या करे ये देश मेरे सिलेबस से बढकर है
नफरत फैला कर तो जाने कितने ही राज चलायै जा सकते है

आप भारत के नागरिक है तो आप मे दो विचारधाराये अवश्य होगी
1 - कट्टरवाद
2 - साम्यवाद

कट्टरवाद हमेशा ही पूर्वजो की देन होता है
फिर वो किसी धर्म संप्रदाय या जाति का हो ।
अगर आप किसी एक कट्टर विचारधारा के समर्थक है तो आप जानेगे ये आप मे आपके पिता अथवा आस पास के ही समाज ने भरा होगा !

हम जन्मजात श्रेष्ठ हैं !
या हम धरती पर राज के लिये ही पैदा हुये है !
या बस हम सही, संसार गलत ये सारे कट्टरवाद मे आते है
हिटलर कुछ इसी मानसिकता से ग्रस्त था
इनका प्रचार भी होता है

2 साम्यवाद
इसकी उत्पति की विचार धारा ही समानता लाने की थी
जिसमे कोई भेदभाव न हो
पर इसे लाने को रूसी राजाओ के सिर कलम करने पडे थे
अब राजतंत्र और पूंजीवाद से तो साम्यवाद की लडाई होनी ही है ।

सवाल है हम किस तरफ है ?
साफ तौर पर जिधर हमारे पिता/ पूर्वज रहै है

आपकी विचारधारा जो भी हो समाज जो भी सिखाये
कुछ भी हो राष्ट्र सरवोपरि रहना चाहिये

और राष्ट्र लोगो से बनता है
अगर समाज का एक व्यक्ति भी डर कर जीनै को मजबूर है तो इसका मतलब नीव खोखली है और आज नही तो कल गिर ही जायेगी ।

राहुल गांधी

भारत को राहुल गांधी के प्रधानमंत्री बनने की बहुत आवश्यकता है ।
1) राहुल के पास आलू से सोना बनाने की टेक्नांलेजी (patent by royal london society) है इससे भारत पर चढा विदेशी कर्ज उतर जाएगा । भारत को सोना गिरवी रख कर विश्व बैक से कर्ज नही लेना पडेगा!
किसान जो उचित मूल्य न मिलने के कारन आलू सडक पर फेकते थे उनहे ऐसा नही करना पडेगा

2) राहुल आंख मारकर ट्रंप की बेटी पटा सकते हैं फिर रफाल /रफेल/राफैल क्या सीधा B3 बॉम्बर और F 22 रैप्टर दहेज मे ले लेंगे। (एयरक्राफ्टकैरियर अलग से छुट्टियो पर जाने के लिये)

3) प्रधानमंत्री कार्यालय मे डेस्क पर रखे एटम बम के बटन को टीवी का समझ के दबाया और उधर पाकिस्तान साफ!!!(बटन क्या बस ट्रंप और किम जोंग के पास है!!😎😎)
(VVPAT Unavailable)

3- मोदीजी 18 घंटे काम करते हैं राहुल 36 घंटे करेंगे क्योंकि "this morning I wake up at night "

4- सफाई आभियान तो पूछिये मत । याद नही कैसे पिछली बार कोयले की खदाने,देश की तिजोरी साफ कर दी थी

5-इंटरनेट कनेक्टिविटी में क्रान्ति लाऐगे । पिछली बार 2G 3G लाया था इस बार 4G 5G AG OG Loजी सुनोजी सब लाएगे ।

6-राहुल जी सबसे वरिष्ठ युवा बैचलर हैं अतः एन्टी रोमियो स्कायड को भंग कर एन्टी अमरीश पुरी स्कवायड बनवाऐंगे

जनेऊधारी भोलेभक्त राहुल " गांधी"- God se विश्व विजय की प्राथना करेंगे

क्या अब भी आप राहुल गांधी को प्रधानमंत्री नही बनांएगे ? क्या आप विकास के साथ नही आएगे

नोट- विकास का पागलपन डाक्टर मनमोहन सिह से इलाज से ठीक हो गया है ।

(यदि लेख समझ न आये तो भक्तिभाव में बहकर ऐनगरी रिएक्ट न करें । इग्नोर करे जैसे बीजेपी अडवानी को करती है । धन्यवाद)

वन्दे मातरम
(इसे पढना optional है सलाह हेतु निकटतम मौलवी से संपर्क करे व फतवे से बचें)

समाप्त